कथाकार प्रो. रामदरश मिश्र
जन्मशती संगोष्ठी संपन्न

१० जुलाई को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा की अध्यक्षता में प्रतिष्ठित कवि एवं कथाकार प्रो. रामदरश मिश्र जन्मशती संगोष्ठी स्वयं प्रो. रामदरश मिश्र के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित की गई। उद्घाटनकर्ता प्रख्यात गुजराती लेखक व साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री रघुवीर चौधरी, जो अहमदाबाद में प्रो. मिश्र के शिष्य भी रहे, ने उनकी रचनाओं में नाटकीय तत्त्वों और कहानियों के अंत में मानवता जाग्रत् होनेवाले बिंदुओं पर विशेष चर्चा की। प्रख्यात हिंदी लेखक श्री प्रकाश मनु ने कहा कि प्रो. मिश्र साहित्य के हिमालय पुरुष हैं, जिसके नीचे बैठकर नई पीढ़ी अनेक बातें सीख सकती है। उनके संपूर्ण लेखन में समय का इतिहास प्रतिबिंबित होता है। साहित्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने इस अवसर को दुर्लभ अवसर बताते हुए कहा कि संभवत: यह पहला अवसर है, जब किसी लेखक की उपस्थिति में उसकी जन्मशती मनाई जा रही है। प्रो. रामदरश मिश्र ने साहित्य अकादेमी को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस सम्मान से मैं अभिभूत हूँ। उन्होंने अपने लंबे जीवन के रहस्य के बारे में बताते हुए कहा कि इसके लिए मैं हमेशा तीन कारण बताता हूँ—पहला, मैंने कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं पाली; दूसरा, कोई नशा नहीं किया, यहाँ तक कि पान तक भी नहीं और तीसरा, मेरा बाजार से कोई संबंध नहीं, मतलब घर का ही खाया-पीया। उन्होंने अपने कई मुक्तक, कविताएँ एवं अपनी सुप्रसिद्ध गजल 'बनाया है मैंने यह घर धीरे-धीरे' सुनाई। प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि गाँव हमेशा मिश्रजी के साथ रहा और उनकी कविताओं में मानवता को प्रतिष्ठित किया गया है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण संवेदनाओं के साथ पूरा युगबोध प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत होता है। पद्य साहित्य पर केंद्रित प्रथम सत्र में श्री बालस्वरूप राही की अध्यक्षता में सुश्री स्मिता मिश्र एवं श्री ओम निश्चल ने अपने विचार व्यक्त किए। गद्य साहित्य पर केंद्रित द्वितीय सत्र में शिक्षाविद् श्री गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में सर्वश्री वेदमित्र शुक्ल, अलका सिन्हा तथा वेदप्रकाश अमिताभ ने आलेख-पाठ किया। कार्यक्रम में प्रो. रामदरश मिश्रजी के पूरे परिवार के साथ ही उनके अनेक शिष्य, लेखक, कॉलेज के विद्यार्थी और पत्रकार उपस्थित थे। साहित्य अकादेमी द्वारा रामदरश मिश्र पर बनाए गए वृत्तचित्र को भी दिखाया गया। संचालन साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। □